SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 03

- Unit – II : Topic
  - A. भारतीय रंगमंच : उद्भव एवं विकास.

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

भारतीय रंगमंच : उद्‌भव एवं विकास

बौद्ध साहित्यों में आख्यान तथा प्रेक्षा, दो प्रकार के साहित्य मिलते हैं जहॉ प्रेक्षा का सीधा मतलब नाटक से है, यद्यपि प्रेक्षा का जन्म आख्यान प्रकार के साहित्यों से हुआ। बौद्ध संस्कृत नाटक में अश्वघोष का नाम काफी प्रतिष्ठित है। अश्वघोष एक महान बौद्ध विद्वान्, कवि एवं नाटककार थे जिनका संबंध प्रथम–द्वितीय सदी से माना जाता है। अश्वघोष के नाटक शास्त्रीय नाटकों के काफी करीब थे और नाट्यसूत्र के नियमों पर आधारित थे। बौद्ध विषयों पर नाटक लिखने की शुरूआत अश्वघोष द्वारा की गई। भरत अपने नाट्यशास्त्र में कई बौद्ध चरित्रों का वर्णन करते हैं। इसके अलावा कई नाटकों में भी बौद्ध उपासकों का वर्णन मिलता है। अश्वघोष ने बाद के नाटककारों तथा कवियों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। परन्तु कोसांबी के लिए बौद्ध संस्कृत नाटक उतने ही असंगत हैं, जितने कि ब्रह्मचारी बौद्ध–भिक्षुओं के विहारों के वैभवशाली चित्र और कामोत्तेजक व आलंकारिक भास्कर्य। उनको इनमें सामंती युग में कदम रखती राजसभा का जीवन, परंपरा और नाट्य रूढ़ियों को यथासंभव निभाते हुए प्रतीत होता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार नाटक की उत्पत्ति कठपुतली नाच (लोककला) से हुई। कई विद्वान भारत को नटपुतली नाच तथा नाटक का जन्मस्थान मानते हैं। प्राचीन तथा मध्यकालीन कई स्रोतों में इसकी प्रस्तुति का वर्णन मिलता है। मुखौटों का प्रयोग आदिमकाल से चला आ रहा है और इसका प्रमाण हमें पुरातात्त्विक स्रोतों से प्राप्त होता है। भगवान बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण को तथा अन्य बौद्ध नायकों जैसे सानिपुत्त, भोग्गल्लान

व कस्सप जैसे नायकों के गृहस्थ जीवन को विशाल दर्शन समुदाय के सामने प्रस्तुत किया जाता था।

उत्तर भारत में संस्कृत साहित्य एवं नाटक का अंतिम केंद्र बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की राजसभा था जहॉ इन विद्याओं को संरक्षण प्राप्त हुआ। मुस्लिम विजय के पहले से ही इन विधाओं का ह्रास शुरू हो चुका था। आठवीं और नवीं शताब्दी ई. के बहुत कम नाटकों की जानकारी हमें प्राप्त है। आठवीं सदी के बाद से ही नाटकों का मंचन काफी कम हो गया था परंतु परंपरागत लोक नाटक परंपरा अबाध्य रूप से जारी रही। राजनीतिक अस्थिरता के कारण राजकीय एवं अभिजात्स प्रश्रय मिलना बंद हो गया। नाटकों में आम लोग तथा स्थियॉ मुख्य चरित्रों से अलग भाषा बोलते हैं। लोक नाटकों की पुष्टि पुरातात्त्विक उत्खननों जैसे हड़प्पा से, और वैदिक साहित्यों, बौद्ध साहित्यों, कौटिल्य के अर्थशास्त्र से होती है।

संदर्भ– सूची

1. आर.पी. कुलकर्णी, दि थिएटर अकॉर्डिंग टू द नाट्यशास्त्र ऑफ भरत, कृष्णा पब्लिशर, दिल्ली, 2005
2. कपिला वात्स्यायन, दि नाट्यशास्त्र, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1996